14. सूचना, संचार तथा प्रचार सेवाएं

वैश्विक रुझानों और प्रौद्योगिकी चालित कृषि में जानकारियों के बढ़ते महत्व को देखते हुए कृषि सूचना एवं प्रकाशन निदेशालय (दीपा) का नाम बदलते हुए कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय (डी के एम ए) कर दिया गया है। ज्ञान प्रबंधन पर आधारित विभिन्न पहल को अपनाते हुए डी के एम ए को तकनीकी और प्रशासनिक तौर पर सुदृढ़ता प्रदान की गई है ताकि कृषि सूचनाओं का नियमित रूप से एकत्रण, प्रबंधन, भंडारण और प्रसारण नीति निर्माताओं, संस्थानों, अनुसंधान/शोधकर्ताओं, प्रसार कर्मियों, सिविल सोसायटियों तथा कृषकों सरीखे पणधारकों तक सुगमता से किया जा सके। पारंपरिक तौर पर ज्ञान से आशय है किसी व्यक्ति विशेष के पास उपलब्ध जानकारी जिसे समूह के बीच में साझा किया जा सकता है। लेकिन ज्ञान प्रबंधन के तहत ज्ञान अर्जन की प्रक्रिया से लेकर प्रसारण और विश्लेषण सरीखे कार्यकलाप भी शामिल होते हैं। ज्ञान प्रबंधन के क्रियाकलापों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए नेटवर्क और कनेक्टिविटी की उपलब्धता सुनिश्चित करते हुए भा.कृ.अनु.प. के विभिन्न संस्थानों में स्थित एरिस प्रकोष्ठों का नाम बदलते हुए कृषि ज्ञान प्रबंधन एकक (ए के एम यू) करने का निर्णय लिया गया है। निदेशालय को भा.कृ.अनु.प. के संस्थानों और कृषि विज्ञान केन्द्रों के साथ भी डी के एम ए के संपर्क विकसित किए गए हैं। डी के एम ए द्वारा भा.कृ.अनु.प. की ब्रांड इमेज को राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार एवं संचार के माध्यम से बेहतर बनाने का दायित्व देते हुए नोडल सेंटर के तौर पर भी विकसित किया जा रहा है। इस क्रम में प्रिंट, इलैक्ट्रॉनिक तथा वेब आधारित सूचना माध्यमों के अलावा अन्य जन संचार माध्यमों का भी इस्तेमाल किया जा रहा है। आई सी टी पर विशेष जोर देते हुए इस अवधि में ज्ञान की साझीदारी प्रबंधन एवं प्रसारण का काम पणधारकों के मध्य करने का काम भी बखूबी जारी रहा।

इस अंतराल में मूल्य वर्धित सेवाओं/फीचर के माध्यम से कृषि ज्ञान सूचना एवं संबंधित समाचारों के ऑनलाइन शेयरिंग के प्रभावी मंच के तौर पर भा.कृ.अनु.प. की वेबसाइट (www.icar.org.in) ने अपनी पहचान बनाई है। औसतन 1.7 लाख विजिटर प्रति माह इस वेबसाइट को देखते हैं जिनमें से लगभग 49% नए विजिटर होते हैं। वैश्विक स्तर पर 200 देशों के पणधारक इस वेबसाइट की सामग्री एवं सूचनाओं से लाभ उठा रहे हैं। वर्ष के दौरान 1263 पृष्ठों को इस वेबसाइट में जोड़ा गया और 1312 पृष्ठों को अद्यतन सूचनाओं से अपडेट किया गया। मौसम आधारित कृषि-परामर्श के जरिये खेती, पशुपालन, मात्स्यिकी तथा प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन हेतु बहुमूल्य एवं उपयोगी टिप्स कृषकों को भी प्रदान की गई। भा.कृ.अनु.प. प्रणाली में कार्यरत विशेषज्ञों से प्राप्त आदानों की सहायता से इस खण्ड को नियमित रूप से दिन-प्रतिदिन के आधार पर अद्यतन किया जाता है।

परिषद की अनुसंधान एवं लोकप्रिय पत्रिकाओं में 'द इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज', 'द इंडियन जर्नल ऑफ एनीमल साइंसेज', 'इंडियन फार्मिंग', 'इंडियन हॉर्टिकल्चर' का विशेष रूप से उल्लेख किया जा सकता है। पांच प्रोफेशनल सोसायटियों के जर्नल ऑन लाइन ज्ञान के प्रसारण हेतु फ्री एक्सेस मोड में उपलब्ध कराए गए हैं। इन पत्रिकाओं के ऑनलाइन संस्करणों की पहुंच वैश्विक स्तर तक है जिसकी पुष्टि 181 देशों के 13,245 पंजीकृत उपयोगकर्ताओं से होती है। इस वर्ष अब तक इस वेबसाइट (http://epubs.icar.org.in) को 150,859 उपयोगकर्ताओं द्वारा देखा गया। इनमें दोनों अनुसंधान पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों के लिए 18700 और 18400 आग्रह भी शामिल हैं। वैश्विक पहचान बनने के कारण '*द इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज*' और '*द इंडियन जर्नल ऑफ एनीमल साइंसेज*' के लिए क्रमश: 59 और 57 देशों से लेख प्राप्त हुए। इन पत्रिकाओं के अलावा '*आई सी ए आर रिपोर्टर*', '*आई सी ए आर न्यूज*', '*आई सी ए आर मेल*', 'एगबायोटैक डाइजेस्ट' और 'आई सी ए आर चिट्ठी' (हिन्दी) भी ओपन एक्सेस में नेट पर प्रिंट संस्करणों में प्रसार-प्रचार हेतु उपलब्ध हैं। पणधारकों के बीच सूचनाओं एवं जानकारियों के प्रचार-प्रसार हेतु कृषकहितैषी प्रौद्योगिकियों एवं आंकड़ों पर आधारित ई-बुक्स को भी वेबसाइट पर मूल्य संवर्धित फीचर के रूप में उपलब्ध कराया गया है। इस अवधि में 7 ई-बुक्स को वेबसाइट पर डाला गया जिन्हें 32,000 उपयोगकर्ताओं ने देखा। जानकारियों से भरपूर ई बुक 'द जर्नी ऑफ आई सी ए आर' को परिषद के स्थापना दिवस यानी 16 जुलाई 2011 को प्रधानमंत्री की उपस्थिति में जारी किया गया। इसके अलावा वेबसाइट पर देश के विभिन्न हिस्सों के उद्यमी कृषकों एवं कृषि से जुड़े अन्य उद्यमकर्ताओं की सफलता गाथाएं भी नियमित रूप से पोस्ट की जाती है। कृषकों और अन्य पणधारकों के लाभ हेतु कृषि से संबंधित महत्वपूर्ण समाचारों को भी अविलम्ब वेबसाइट पर डाला जाता है। इस अंतराल में लगभग 200 सफलता गाथाओं/समाचारों को वेबसाइट पर डाला गया। वेबसाइट की वीडियो फिल्मों/कैप्सूलों तथा वर्चुअल टूर के प्रति आकर्षित होने वाले उपभोक्ताओं की संख्या प्रतिमाह औसतन 1200 है जो कुल मिलाकर 6000 के करीब कही जा सकती है।

विभिन्न वर्गों के पणधारकों की कृषि संबंधी ज्ञान एवं सूचना की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रिंट माध्यम से उपलब्ध परिषद के प्रकाशनों में तकनीकी पुस्तकों, मोनोग्राफ, रिपोर्ट, टैक्स्टबुक्स, हैण्डबुक्स

और कई अन्य तदर्थ प्रकाशनों का उल्लेख किया जा सकता है। इनके अलावा निदेशालय द्वारा विशिष्ट एवं लक्षित पाठकों हेतु अनुसंधान पत्रिकाओं, लोकप्रिय पत्रिकाओं और इन हाउस जर्नल का अंग्रेजी (7 पत्रिकाएं) तथा हिन्दी (3 पत्रिकाओं) प्रकाशन भी नियमित तौर पर किया जा रहा है। कम्प्यूटर अनुप्रयोग आधारित टैक्नोलॉजी के बढ़ते प्रयोग से प्रकाशनों की गुणवत्ता में निरंतर सुधार कर पाना संभव हो सका है तथा प्रोसेसिंग के समय में भी काफी कमी आई है। प्रकाशनों को अधिक प्रभावी बनाने के उद्देश्य से विषयवस्तु विशेषज्ञों और लक्षित पाठकों से परामर्श लेते हुए पाठ्य सामग्री में मूल्य अभिवर्द्धन निरंतर किया जाता है।

ज्ञान संसाधनों को साझी अनुसंधान परियोजनाओं एवं विकास कार्यों के साथ शेयर करने के लक्ष्य से विकसित राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के क्रियान्वयन हेतु परिषद के नोडल केन्द्र के रूप में भी निदेशालय द्वारा दायित्वों का वहन किया जाता है। अब तक परिषद के 20 संस्थान/राज्य कृषि विश्वविद्यालय इस नेटवर्क से जुड़ चुके हैं और निकट भविष्य में शेष संस्थान भी जुड़ जाएंगें। भा.कृ.अनु.प. के समस्त संस्थानों को सलाह देने के साथ इंटरनेट बैण्डविठ्थ को 100 एम बी पी एस के स्तर पर अपग्रेड करने हेतु धनराशि का आबंटन किया जा चुका है ताकि संचार द्रुतगामी और प्रभावी ढंग से संभव हो सके। डी के एम ए की सलाह से भा.कृ.अनु.प.के समस्त संस्थानों द्वारा वेबसाइट पर उपलब्ध सामग्रियों के प्रबंधन एवं उनमें एकरूपता सुनिश्चित करने हेतु गाइड लाइन का क्रियान्वयन किया जा रहा है। एफ ए ओ के एग्रिस डेटाबेस के नेशनल इनपुट सेंटर के रूप में भी निदेशालय 1286 एग्रिस डेटा बेस की इंडेक्सिंग कर इस अवधि में एफ ए ओ को भेजी गई। डी के एम ए द्वारा भा.कृ.अनु.प. के संस्थानों के कर्मियों को वेब एग्रिस हेतु ट्रेनिंग भी प्रदान की जाती हैं। इस वर्ष 5 संस्थानों/राज्य कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा वेब एग्रिस का क्रियान्वयन किया गया। भा.कृ.अनु.प. मुख्यालय में स्थित के वी के-हब से सप्ताह में दो बार ई-इनेबल्ड के वी के माध्यम से वैज्ञानिकों और प्रसार कर्मियों के इंटरएक्टिव सेशन (76) का आयोजन इस अवधि में किया गया।

देशभर में भा.कृ.अनु.प. की विजिबिलिटी और ब्रांड इमेज को बेहतर बनाने के लिए जनसंचार माध्यमों के जरिये लक्षित समूहों तक संदेश पहुंचाने हेतु एक नई पहल की गई है। इस पहल के अंतर्गत राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर के प्रिंट एवं इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में इवेन्ट/टैक्नोलॉजी आधारित समाचारों एवं फीचर्स को जारी किया जाता है। देश की 18 भाषाओं में 2500 समाचारों की क्लिपिंग्स और 500 वीडियो न्यूज का प्रकाशन एवं प्रसारण इस दौरान किया गया। बहु केन्द्रिक एन ए आई पी की संचालित 'मोबिलाइजिंग मास मीडिया सपोर्ट फॉर शेयरिंग एग्री-इंफार्मेशन' प्रायोजना के तहत राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय जनसंचार माध्यमों (हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, मलयालम और तमिल) में 1300 न्यूज क्लिपिंग्स का प्रकाशन हुआ और इसके जरिये राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय प्रादेशिक 380 टेलीविजन/रेडियो कार्यक्रमों को तैयार करने हेतु सुविधाएं भी प्रदान की गईं। प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करने के लिए कंर्सोटियम पार्टनर्स के साथ मिलकर कई आयोजन किए गए जिनमें 3000 कृषकों/उद्यमियों ने वैज्ञानिकों/कृषकों से इंटरफेस के जरिये जानकारियां और सूचनाएं हासिल कीं। परिषद द्वारा आयोजित प्रमुख इवेन्ट्स के लिए प्रचार एवं जनसंपर्क की सुविधाएं भी प्रदान की गईं।

- भा.कृ.अनु.प. के पशुविज्ञान संभाग के संस्थानों के निदेशकों की विचारोत्तेजक बैठक (30-31 जनवरी) मखदूम, उत्तर प्रदेश
- भा.कृ.अनु.प. सोसायटी की 82 वीं वार्षिक आम बैठक (2 फरवरी), नई दिल्ली
- दसवीं कृषि विज्ञान कांग्रेस (10 फरवरी), लखनऊ
- उच्च कृषि शिक्षा पर राष्ट्रीय परामर्शदात्री एवं कुलपति संगोष्ठी, (21 फरवरी), नई दिल्ली
- कृषि निदेशालयों के कुलपतियों और भा.कृ.अनु.प. के निदेशकों का इंटरफेस तथा निदेशकों की संगोष्ठी (23 फरवरी), नई दिल्ली
- भा.कृ.अनु.प.-सी आई आई इंडस्ट्री मीट 2011 (23 मई), नई दिल्ली
- ''कृषि उत्पादकता बढ़ाने एवं खाद्य सुरक्षा हेतु कीटनाशकों के प्रयोग पर आधारित प्रौद्योगिकी हस्तांतरण'' पर राष्ट्रीय सेमिनार (1 जून), नई दिल्ली
- भा.कृ.अनु.प. के संस्थानों के देशभर में फैले क्षेत्रीय केन्द्रों के प्रमुखों की बैठक (14 जून) भोपाल
- भा.कृ.अनु.प. का 83वां स्थापना दिवस (16 जुलाई), नई दिल्ली
- 'कृषि में लैंगिक दृष्टिकोण' विषय पर राष्ट्रीय विमर्श (8 अगस्त), नई दिल्ली
- 50वीं अखिल भारतीय गेहूं और जौ अनुसंधान कर्मी बैठक (1-4 सितम्बर), नई दिल्ली
- एन जी ओ, कृषकों तथा उद्यमियों के साथ भा.कृ.अनु.प. की बैठक (17 सितम्बर), नई दिल्ली
- कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, निदेशकों (अनुसंधान), निदेशकों (प्रसार), और नियंत्रकों के साथ प्रायोजना समन्वयकों (ए आई सी आर पी) तथा प्रक्षेत्रीय प्रायोजना निदेशकों की बैठक (26 सितम्बर), नई दिल्ली
- दक्षिणी एशिया हेतु बॉरलॉग संस्थान (बी आई एस ए) का शुभारंभ (5 अक्टूबर), नई दिल्ली
- ए एस आर बी का 38वां स्थापना दिवस (1 नवम्बर), नई दिल्ली
- पंजाब कृषि विश्वविद्यालय में प्रक्षेत्रीय प्रायोजना निदेशालय, प्रक्षेत्र-1 (भा.कृ.अनु.प.) के प्रशासनिक भवन की आधारशिला (25 नवम्बर), लुधियाना
- कृषि विज्ञान के अग्रणीय क्षेत्रों में विदेशों में प्रशिक्षित वैज्ञानिकों के साथ भा.कृ.अनु.प.-एनएआईपी की बैठक (28 नवम्बर), नई दिल्ली
- राष्ट्रीय कृषि विज्ञान केन्द्र संगोष्ठी (6-8 दिसम्बर), जबलपुर

डी के एम ए ने इस दौरान विविध पणधारकों के समक्ष व्यावसायिक एवं व्यवहारिक महत्व की विभिन्न कृषि प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन करने के लिए 21 राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय प्रौद्योगिकी मेलों/संगोष्ठियों में हिस्सा लिया। भा.कृ.अनु.प. की प्रौद्योगिकियों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित करने के उद्देश्य से निदेशालय द्वारा मस्कट के ओमन इंटरनेशनल एग्जीबिशन सेंटर में आयोजित चौथा इंडियन ट्रेड फेअर '*इंडेक्सपो*-2011' (20-22 सितम्बर) में भी हिस्सा लिया गया। इसके अतिरिक्त निदेशालय द्वारा भा.कृ.अनु.प. के विभिन्न संस्थानों द्वारा क्षेत्रीय मेलों/एक्सपो में हिस्सा लेने के कार्य में भी सक्रिय सहयोग प्रदान किया गया।